

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या: 3655

उत्तर देने की तारीख: सोमवार, 11 अगस्त, 2025

20 श्रावण, 1947 (शक)

कीझाड़ी उत्खनन रिपोर्ट के प्रकाशन में देरी

3655. श्रीमती कनिमोझी करुणानिधि:

श्री सु. वेंकटेशन:

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) तमिलनाडु में कीझाड़ी पुरातात्विक स्थल की उत्खनन रिपोर्ट के प्रकाशन में कई उत्खनन चरणों के पूरा होने के बावजूद देरी के क्या कारण हैं;

(ख) क्या सरकार ने जनवरी 2023 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को तैयार और प्रस्तुत की गई मसौदा उत्खनन रिपोर्ट प्राप्त कर ली है और उसे स्वीकार कर लिया है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) क्या सरकार या एएसआई द्वारा आधिकारिक तौर पर इस पर कोई आपत्ति उठाई गई थी;

(घ) वर्तमान में मूल रिपोर्ट की समीक्षा या संशोधन करने के लिए नियुक्त अधिकारी/अधिकारियों का ब्यौरा क्या है और अंतिम रिपोर्ट के सार्वजनिक प्रकाशन और संसद के समक्ष प्रस्तुत करने की अपेक्षित समय-सीमा क्या है;

(ङ.) क्या सरकार ने कई उत्खनन चरणों और निष्कर्षों के बावजूद, जो 580 ईसा पूर्व से पहले की एक अत्यधिक उन्नत सभ्यता की ओर इशारा करते हैं, कीझाड़ी को आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय महत्व के स्थल के रूप में मान्यता दी है; और

(च) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

संस्कृति और पर्यटन मंत्री
(श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को वर्ष 2014-15 और 2015-16 सत्रों की उत्खनन रिपोर्ट जनवरी, 2023 में प्राप्त हुई थी और तब से मानक प्रक्रिया के अनुसार विशेषज्ञों द्वारा इसकी जाँच की जा रही है। यह प्रक्रिया अकादमिक प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है और इसका उद्देश्य निष्कर्षों के महत्व को कम करना अथवा इसमें विलंब करना नहीं है।

(ख) से (घ): विशेषज्ञों द्वारा प्रथम दो सत्रों की उत्खनन रिपोर्ट की जांच की गई है तथा इसकी कार्यप्रणाली, कालक्रम, व्याख्या, प्रस्तुति और विश्लेषणात्मक समस्या आदि से संबंधित त्रुटियों के बारे में प्रमुख उत्खननकर्ता को सूचित कर दिया गया है।

(ङ.) और (च): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस स्थल की पुरातात्विक क्षमता को देखते हुए, वर्ष 2014 से वर्ष 2017 के बीच यहाँ उत्खनन कार्य किया था। वर्ष 2018 से, तमिलनाडु राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा इस स्थल पर उत्खनन कार्य किया जा रहा है। तथापि, तमिलनाडु राज्य पुरातत्व विभाग की अंतिम रिपोर्ट अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है।
